मणिमाला

राजस्थान के साथिन आंदोलन से हम आप सब परिचित हैं। साथिनों को जानते हैं। उनके काम को जानते हैं। उनके संघर्ष को जानते हैं। हम सबको यह भी पता है कि यह 'साथिन आंदोलन' एक सरकारी कार्यक्रम है। इसका सरकारी नाम है "महिला विकास कार्यक्रम"। पर लोग इसे साथिन आंदोलन कहते है। क्यों? इसलिए कि इस कार्यक्रम को साथिनों ने शुरू किया। साथिनों ने चलाया। साथिनों ने इसकी पहचान बनाई। उनकी कठिन मेहनत का ही नतीजा है कि लोगों ने इसे नया नाम दे दिया—साथिन आंदोलन।

सरकार ने ही यह कार्यक्रम शुरू किया था। अब सरकार ही इसे तोड़ रही है। सरकार इसे सिर्फ कार्यक्रम के रूप में चलाना चाहती थी। लोगों ने समर्थन दिया। साथिनों ने काम किया। और यह कार्यक्रम आंदोलन बन गया। कहीं बाल विवाह की परंपरा के ख़िलाफ़। कहीं बलात्कार के ख़िलाफ़। कहीं मजदूरी पाने के लिए। कहीं अनाज के सही बंटवारे के लिए।

कार्यक्रम कागज पर या जमीन पर

सरकार को ऐसा जुझारू कार्यक्रम नहीं चाहिए। या सिर्फ कागज पर चाहिए। जमीन पर नहीं। इसीलिए उन सबको हटाने का फैसला कर लिया गया है। उन साथिनों को सरकार हटायेगी जिन्होंने पिछले पांच सालों से अपना खून पसीना बहाया है। जुल्म के खिलाफ लड़ी हैं। जुल्म सहे हैं। परंपराओं को तोड़ा है। तुड़वाया है। घर-गृहस्थी के काम संभालते हुए गांव को बेहतर बनाने के लिए हाड़तोड़ मेहनत की। बेहतर समाज के सपने देखे। उन्हें सच करने के लिए खून-पसीना बहाया। उन साथिनों की जरूरत अब नहीं रही।

क्या विकास पूरा हो गया?

हम-आप पूछ सकते हैं कि क्या राजस्थान में विकास का काम पूरा हो गया। जोर-जुल्म खत्म हो गये। लड़कियों की पढ़ाई का काम पूरा हो गया। बाल विवाह होने बंद हो गये। जवाब मिलेगा-'नहीं'। फिर सरकार भी कहती है कि काम फैलाना है, इसलिए पुरानी साथिनों को हटाना होगा। उनकी जगह नये गांव होंगे। नई साथिनें होंगी। सिर्फ पांच साल के लिए। क्यों? साथिनें ज्यादा दिन रह जाती हैं तो सरकार चलाने में मुश्किल होती है। आज हम इन्हीं सवालों पर चर्चा करेंगे।

इस राज्य में कुल 37 हजार गांव हैं। इसमें से डेढ़ हजार गांव ऐसे हैं जहां एक भी औरत को पढ़ना-लिखना नहीं आता। पूरे राज्य में सिर्फ 20.8 प्रतिशत औरतों को ही पढ़ना लिखना आता है।

सरकार ने महिला विकास कार्यक्रम शुरू किया था। इस कार्यक्रम ने रूप ले लिया 'साथिन आंदोलन' का। अब सरकार ही इसे तोड़ रही है। सरकार को ऐसा जुझारू कार्यक्रम नहीं चाहिए। या सिर्फ कागज पर चाहिए, जमीन पर नहीं। इसलिए उन सभी साथिनों को सरकार हटायेगी जिन्होंने पिछले पांच सालों से अपना खून-पसीना बहाया है। जुल्म के खिलाफ लड़ी हैं। जुल्म सहे हैं। परंपराओं को तोड़ा है। बेहतर समाज के सपने देखे। हाड़तोड़ मेहनत की। इन साथिनों की जरूरत अब नहीं रही।

पूरे देश में जितने बाल विवाह होते हैं उसमें से 60 प्रतिशत सिर्फ राजस्थान में होते हैं। औरतों को प्रसव की सुविधा अभी भी उपलब्ध नहीं है। सिर्फ दस प्रतिशत प्रसव अस्पतालों में होते हैं। बाकी घरों में। ज्यादातर प्रसव कराने वाली औरतों की कोई ट्रेनिंग तक नहीं होती।

भारी संख्या में बच्चों की मौत होती है। यहां हर दो मिनट में एक बच्चा दस्तों से मरता है। जीवन रक्षक घोल की जानकारी भी कम औरतों को है। लड़कियों को जन्म लेते ही मार डालने का रिवाज कुछ इलाकों में है। गांव में बेटियों को पैदा होने के बाद मार डालते हैं। शहरों में पेट में ही मार डालते हैं। फिर भी सरकार को लगता है इन गांवों में विकास का काम पूरा हो चुका है।

कार्यक्रम की शुरुआत

"यूनिसेफ" के सहयोग से राजस्थान में महिला विकास कार्यक्रम शुरू किया था। सन् 1984 में। छह जिलों में शुरुआत हुई थी। पूरा खर्च "यूनिसेफ" उठा रहा था। पांच साल बाद "यूनिसेफ" ने यह कार्यक्रम राज्य सरकार को सौंप दिया। 1990 में 14 और जिलों में इसे लागू किया गया। हाल ही में 21 जिलों में फैलाया गया। अब 31 जिलों में ले जाने की योजना है।

कार्यक्रम को फैलाने से किसी को ऐतराज नहीं है। पर यह किसी को समझ में नहीं आ रहा कि पहले से कार्य कर रही साथिनों को हटाना क्यों जरूरी हो गया है। सरकार का कहना है कि पैसे की कमी है। पैसे की कमी की वजह से पुरानी साथिनों को हटाया जायेगा। उससे जो पैसा बचेगा वह नये गांवों में नई साथिनों को दिया जायेगा।

कड़वा सच

वास्तव में सच्चाई यह नहीं। सच्चाई तो कुछ और है। साथिनों ने जितनी लगन से काम किया वह सरकार को अच्छा नहीं लगा।

चेतना जगाने का नाटक तो ठीक है। लेकिन चेतना आने लगे तो गलत। साथिनों ने गांवों में कुछ ऐसा माहौल बना रखा था कि व्यवस्था कांप गई थी। हर जगह अधिकारों की चर्चा। अधिकारों की मांग। लोग अधिकार जानेंगे तो मांगेंगे। मांगने पर नहीं मिलेगा तो लड़ेंगे। सरकार बदलने को तैयार नहीं। समाज का एक तबका बदलने को तैयार है। दूसरा नहीं। ऐसे में मुश्किल हो रही है।

भंवरी बाई भी एक साथिन है। हम सब जानते हैं कि उसके साथ 1992 में बलात्कार हुआ था। गांव के ही ताकतवर लोगों ने किया था। वह चुप नहीं रही। लड़ी। खूब लड़ी। सभी साथिनों ने साथ दिया। महिला संगठनों ने भी साथ दिया। संघर्ष

अभी तक चल रहा है। उसकी आवाज को दबाने की कोशिश भी चल रही है।

बहिष्कार

हाल ही में बस्सी पंचायत के नये सरपंचों ने सभी साथिनों का हुक्का पानी बंद करने का फैसला किया है। उन्होंने एक बैठक की। उसमें तय किया गया कि साथिनों ने गांव को बदनाम किया है। भंवरी बाई का साथ देकर बस्सी पंचायत को बदनाम किया है। भंवरी बाई पर मुकदमा वापस लेने के लिए भी दबाव डाला गया। वापस न लेने पर साथिनों के बहिष्कार का फैसला किया गया। सारे अखबारों में यह खबर छपी। सरकार ने कुछ नहीं किया। महिला विकास कार्यक्रम के बड़े अफसरों ने भी कुछ नहीं किया। जाहिर है कि जुझारू साथिनें गांव के दबंग लोगों को रास नहीं आ रहीं।

इन्हीं के दबाव में सरकार ने साथिनों के जुझारूपन को कम करने का फैसला किया है। पांच साल के बाद साथिनों को हटा दिया जायेगा। यानि पांच साल के बाद उन्हें काम की कोई सुविधा नहीं दी जायेगी। उनकी जिम्मेदारी कोई नहीं लेगा। ऐसे कैसे गांव की औरतें बाहर निकल पायेंगी। कैसे लड़ पायेंगी कुरीतियों से। कैसे लोगों को उनके अधिकारों के बारे में बता पायेंगी। कैसे वे तन कर खड़ी हो पायेंगी। जब स्वयं ही नहीं अड़ पायेंगी तो दूसरों को अड़ना कैसे सिखायेंगी।

सभी साथिनें सरकार की इस नीति के खिलाफ एकजुट होकर लड़ रही हैं। 14 अप्रैल को उन्होंने जयपुर में एक सम्मेलन किया। उन्होंने संकल्प लिया कि वे अपनी लड़ाई जारी रखेंगी। □

सरकार ने महिला विकास कार्यक्रम शुरू किया था। इस कार्यक्रम ने रूप ले लिया 'साथिन आंदोलन' का। अब सरकार ही इसे तोड़ रही है। सरकार को ऐसा जुझारू कार्यक्रम नहीं चाहिए। या सिर्फ कागज पर चाहिए, जमीन पर नहीं। इसलिए उन सभी साथिनों को सरकार हटायेगी जिन्होंने पिछले पांच सालों से अपना खून-पसीना बहाया है। जुल्म के खिलाफ लड़ी हैं। जुल्म सहे हैं। परंपराओं को तोड़ा है। बेहतर समाज के सपने देखे। हाड़तोड़ मेहनत की। इन साथिनों की जरूरत अब नहीं रही।

पूरे देश में जितने बाल विवाह होते हैं उसमें से 60 प्रतिशत सिर्फ राजस्थान में होते हैं। औरतों को प्रसव की सुविधा अभी भी उपलब्ध नहीं है। सिर्फ दस प्रतिशत प्रसव अस्पतालों में होते हैं। बाकी घरों में। ज्यादातर प्रसव कराने वाली औरतों की कोई ट्रेनिंग तक नहीं होती।

भारी संख्या में बच्चों की मौत होती है। यहां हर दो मिनट में एक बच्चा दस्तों से मरता है। जीवन रक्षक घोल की जानकारी भी कम औरतों को है। लड़कियों को जन्म लेते ही मार डालने का रिवाज कुछ इलाकों में है। गांव में बेटियों को पैदा होने के बाद मार डालते हैं। शहरों में पेट में ही मार डालते हैं। फिर भी सरकार को लगता है इन गांवों में विकास का काम पूरा हो चुका है।

कार्यक्रम की शुरुआत

"यूनिसेफ" के सहयोग से राजस्थान में महिला विकास कार्यक्रम शुरू किया था। सन् 1984 में। छह जिलों में शुरुआत हुई थी। पूरा खर्च "यूनिसेफ" उठा रहा था। पांच साल बाद "यूनिसेफ" ने यह कार्यक्रम राज्य सरकार को सौंप दिया। 1990 में 14 और जिलों में इसे लागू किया गया। हाल ही में 21 जिलों में फैलाया गया। अब 31 जिलों में ले जाने की योजना है।

कार्यक्रम को फैलाने से किसी को ऐतराज नहीं है। पर यह किसी को समझ में नहीं आ रहा कि पहले से कार्य कर रही साथिनों को हटाना क्यों जरूरी हो गया है। सरकार का कहना है कि पैसे की कमी है। पैसे की कमी की वजह से पुरानी साथिनों को हटाया जायेगा। उससे जो पैसा बचेगा वह नये गांवों में नई साथिनों को दिया जायेगा।

कड़वा सच

वास्तव में सच्चाई यह नहीं। सच्चाई तो कुछ और है। साथिनों ने जितनी लगन से काम किया वह सरकार को अच्छा नहीं लगा।

चेतना जगाने का नाटक तो ठीक है। लेकिन चेतना आने लगे तो गलत। साथिनों ने गांवों में कुछ ऐसा माहौल बना रखा था कि व्यवस्था कांप गई थी। हर जगह अधिकारों की चर्चा। अधिकारों की मांग। लोग अधिकार जानेंगे तो मांगेंगे। मांगने पर नहीं मिलेगा तो लड़ेंगे। सरकार बदलने को तैयार नहीं। समाज का एक तबका बदलने को तैयार है। दूसरा नहीं। ऐसे में मुश्किल हो रही है।

भंवरी बाई भी एक साथिन है। हम सब जानते हैं कि उसके साथ 1992 में बलात्कार हुआ था। गांव के ही ताकतवर लोगों ने किया था। वह चुप नहीं रही। लड़ी। खूब लड़ी। सभी साथिनों ने साथ दिया। महिला संगठनों ने भी साथ दिया। संघर्ष

अभी तक चल रहा है। उसकी आवाज को दबाने की कोशिश भी चल रही है।

बहिष्कार

हाल ही में बस्सी पंचायत के नये सरपंचों ने सभी साथिनों का हुक्का पानी बंद करने का फैसला किया है। उन्होंने एक बैठक की। उसमें तय किया गया कि साथिनों ने गांव को बदनाम किया है। भंवरी बाई का साथ देकर बस्सी पंचायत को बदनाम किया है। भंवरी बाई पर मुकदमा वापस लेने के लिए भी दबाव डाला गया। वापस न लेने पर साथिनों के बहिष्कार का फैसला किया गया। सारे अखबारों में यह खबर छपी। सरकार ने कुछ नहीं किया। महिला विकास कार्यक्रम के बड़े अफसरों ने भी कुछ नहीं किया। जाहिर है कि जुझारू साथिनें गांव के दबंग लोगों को रास नहीं आ रहीं।

इन्हीं के दबाव में सरकार ने साथिनों के जुझारूपन को कम करने का फैसला किया है। पांच साल के बाद साथिनों को हटा दिया जायेगा। यानि पांच साल के बाद उन्हें काम की कोई सुविधा नहीं दी जायेगी। उनकी जिम्मेदारी कोई नहीं लेगा। ऐसे कैसे गांव की औरतें बाहर निकल पायेंगी। कैसे लड़ पायेंगी कुरीतियों से। कैसे लोगों को उनके अधिकारों के बारे में बता पायेंगी। कैसे वे तन कर खड़ी हो पायेंगी। जब स्वयं ही नहीं अड़ पायेंगी तो दूसरों को अड़ना कैसे सिखायेंगी।

सभी साथिनें सरकार की इस नीति के खिलाफ एकजुट होकर लड़ रही हैं। 14 अप्रैल को उन्होंने जयपुर में एक सम्मेलन किया। उन्होंने संकल्प लिया कि वे अपनी लड़ाई जारी रखेंगी। □